(2) उपचित्र

Def. विषमे यदि सौ सलगा दले
भौ युजि भाद् गुरुकावुपचित्रम् ।

Sch. G. स, स, स, ल, ग (odd quarter)
भ, भ, भ, ग, ग, (even quarter).

Ex. सुरवैरिवपुस्तनुतां मुदं
हेमनिभांशुकचन्दनलिप्तम् ।
गगनं चपलामिलितं यथा
शारदनीरधरैरुपचित्रम् ॥

(3) पुष्पिताग्रा

(Also called औपच्छन्दसिक)

Def. अयुजि नयुगरेफतो यकारो
युजि तु नजौ जरगाश्च पुष्पिताग्रा ।

Sch. G. न, न, र, य (odd quarter)
न, ज, ज, र, ग (even quarter).

Ex. अथ मदनवधूरुपप्लवान्तं
व्यसनकृशा परिपालयांबभूव ।
शशिन इव दिवातनस्य लेखा
किरणपरिक्षयधूसरा प्रदोषम् ॥
Ku. 4. 46.

(4) वियोगिनी

(Also called वैतालीय or सुन्दरी)

Def. विषमे ससजा गुरुः समे
सभरा लोऽथ गुरुर्वियोगिनी ।

Sch. G. स, स, ज, ग (odd quarter)
स, भ, र, ल, ग (even quarter).

Ex. सहसा विदधीत न क्रिया-
मविवेकः परमापदां पदम् ।
वृणते हि विमृश्यकारिणं
गुणलुब्धाः स्वयमेव संपदः ॥ Ki. 2. 30.

(5) वेगवती

Def. सयुगात् सगुरू विषमे चेद्
भाविह वेगवती युजि भाद्गौ ।

Sch. G. स, स, स, ग (odd quarter)
भ, भ, भ, ग, ग (even quarter).

Ex. स्मरवेगवती व्रजरामा
केशववंशरवैरतिमुग्धा ।
रभसान्न गुरून् गणयन्ती
केलिनिकुञ्जगृहाय जगाम ॥

(6) हरिणप्लुता

Def. सयुगात्सलघू विषमे गुरु-
र्युजि नभौ भरकौ हरिणप्लुता ।

Sch. G. स, स, स, ल, ग (odd quarter)
न, भ, भ, र (even quarter).

Ex. स्फुटफेनचया हरिणप्लुता
बलिमनोज्ञतटा तरणेः सुता ।
कलहंसकुलारवशालिनी
विहरतो हरति स्म हरेर्मनः ॥

N. B. Metres like अपरवक्त्र or औपच्छन्दसिक and वैतालीय or वियोगिनी are usually treated as *Jatis*; (see Section D). But they are sometimes defined in the Gaṇa scheme, and are, therefore, given under the class of Vrittas.

SECTION C

विषमवृत्त (Unequal Metres)

The most common metre of this class is called उद्गता

Def. प्रथमे सजौ यदि सलौ च
नसजगुरुकाण्यनन्तरम् ।
यद्यथ भनजलगाः स्युरथो
सजसा जगौ च भवतीयमुद्गता ॥

Sch. G. स, ज, स, ल, (first quarter)
न, स, ज, ग (second ,,)
भ, न, ज, ल, ग, (third ,,)
स, ज, स, ज, ग, (fourth ,,)

Ex. अथ वासवस्य वचनेन
रुचिरवदनस्त्रिलोचनम् ।
क्लान्तिरहितमभिराधयितुं
विधिवत्तपांसि विदधे धनञ्जयः ॥ Ki. 12. 1.

See Śi. 15 also.

Another variety of उद्गता is mentioned, wherein the third quarter has भ, न, भ, ग instead of भ, न, ज, ल, ग.

Other kinds of metre in which every quarter of the stanza differs in the number of syllables, are included under the general name 'Gāthā'. The same name is applicable to stanzas consisting of any number of quarters other than four. As in the case of उपजाति, any two or more quarters of a regular metre may be combined to form अर्धसमवृत्त or विषमवृत्त.

SECTION D

जाति (Metres regulated by the number of syllabic instants).

(*a*) The most common variety of such metres is **आर्या**. It is said to have nine sub-divisions:—

पथ्या विपुला चपला मुखचपला जघनचपला च ।
गीत्युपगीत्युद्गीतय आर्यागीतिर्नवैव वार्यायाः ॥

Of these nine kinds the last four are generally used and deserve mention.

(1) आर्या

Def. यस्याः पादे प्रथमे द्वादशमात्रास्तथा तृतीयेऽपि ।
अष्टादश द्वितीये चतुर्थके पञ्चदश सार्या ॥ Śrut. 4.

The first and the third quarters must each contain 12 mātrās or syllabic instants (one being allotted to a short vowel, and two to a long one), the second 18 and the fourth 15.